ISSN: 2584-0231(Online)
International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology
© IJMRAST | Vol. 2 | Issue 3 | March 2024
Available online at: https://ijmrast.com
DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v2i3.45

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं ऑनलाइन शिक्षा

श्याम नरायन सिंह[1], डॉ0 हंसराज[2]
[1]शोधार्थी, शिक्षा संकाय, सिद्वार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु , सिद्वार्थनगर
[2]शोध निर्देशक, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, रतनसेन डिग्री कॉलेज, सिद्वार्थनगर
[2]ईमेलः hansrajsingh.bhu@gmail.com

सारांश

आज के इस डिजिटल युग में हम सुबह से लेकर रात्रि तक मोबाईल फोन, टैबलेट, सोशल मीडिया, आईपैड आदि में अधिक समय खर्च कर रहे है, परन्तु इस डिजिटल युग के प्रवेश में शिक्षा की ही भूमिका है। शिक्षा के मुख्य उद्देश्यों को प्राप्त करने में अधिगम का महत्त्वपूर्ण स्थान है। समय के साथ सीखने की प्रक्रियाओं में परिवर्तन आता रहता है। ई–अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमे पारम्परिक कक्षा–कक्ष न होकर पाठयक्रम व प्रोग्राम ऑनलाइन होते हैं। नई शिक्षा नीति 2020 में देश की शिक्षा व्यवस्था मे कई परिवर्तनों की आधारशिला रखी गई है। नई शिक्षा नीति में ऑनलाइन शिक्षा जैसे नए आयामों को समावेशित कर उसकी जरूरत एवं प्रासंगिकता को स्पष्ट किया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एंव ऑनलाइन शिक्षा से सम्बन्धित परिचय, प्रक्रिया, लाभ एवं चुनौतियों को अनावृत किया गया है।

मूल शब्दः *नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल युग*

प्रस्तावना

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। यह शिक्षा जीवन को सरल एंव अर्थपूर्ण बनाने का आधारभूत स्तम्भ है। शिक्षा एक सच्चे मित्र की तरह है, जो किसी भी परिस्थिति में साथ नहीं छोड़ती। मानव यदि शिक्षा को अपना परम मित्र बना लेता है तो उसका जीवन आनन्दमय और कल्पनाओं से भर जाता है। शिक्षा का स्वरूप व्यापक है जिसमें ज्ञान, उचित आचरण तकनीकी दक्षता, शिक्षण और विद्या प्राप्ति का समावेशन होता है। यह शिक्षा ही है जो बालक के अन्तर्निहित तत्वों को बाहर की ओर अग्रसरित करती है।

भारतीय समाज शिक्षा और संस्कृति के मामले में प्राचीन काल से ही बहुत समृद्ध रहा है। प्राचीन भारत में शिक्षा को एक महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया। यदि हम शिक्षा प्रणाली की बात करें तो प्राचीन काल में गुरुकुल परम्परा हमारी शिक्षा व्यवस्था की सबसे महत्त्वपूर्ण शिक्षा व्यवस्था रही है। गुरुकुल प्रणाली का सर्वप्रथम उल्लेख वेदों और उपनिषदों में मिलता है। प्राचीन काल में विदेशों सें लोग गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के लिए भारत आते रहते थे। इसी गुरुकुल प्रणाली से शिक्षित एंव दीक्षित होकर अनेक चरित्रों ने इतिहास मे अमरत्व प्राप्त किया है। ऐसे महापुरुषों मे भगवान श्रीराम, श्रीकृष्ण, बुद्ध, महावीर, आचार्य चाणक्य, आचार्य जीवक आदि है।

प्राचीन काल में ही अखंड भारत में प्रसिद्ध तक्षशिला एवं नालंदा विश्वविद्यालय ने शिक्षा के क्षेत्र में अपने मानदंडों को स्थापित कर सभी को अपनी ओर आकर्षित किया। तक्षशिला और नालन्दा विश्वविद्यालय ने शिक्षा की गुणवत्ता और अनुशासन में एक नया आयाम स्थापित किया। पाश्चात्य संस्कृति के आगमन ने इसके रूप को विकृत तो किया, लेकिन इसे खत्म नहीं कर सका।

पूरे देश में एक समान शिक्षा प्रणाली लागू करने और समय–समय पर हुए परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार के शिक्षा विभाग (मानव संसाधन विकास मंत्रालय) ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा की है। कोठारी आयोग (1964–66) की सिफारिश पर देश की पहले राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा 1968 ई0 में हुई तत्पश्चात 1986 ई0 में दूसरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति घोषित हुई, जिसकी कार्ययोजना 1992 ई0 में प्रस्तुत की गई और अब लगभग तीन दशक बाद भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने देश और वैश्विक परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए नई शिक्षा नीति 2020 की घोषणा की है। इस नई शिक्षा नीति में कई क्रांतिकारी परिवर्तनों के साथ आने वाली पीढ़ी के लिए रोजगार के अवसर, आत्मनिर्भरता तथा ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र को एक नई दिशा देने का कार्य करेगी। ज्ञान के परिदृश्य के सन्दर्भ में इस शिक्षा नीति में लिखा गया कि– ज्ञान के परिदृश्य में पूरा विश्व तेजी से परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा है। मशीन लर्निंग और आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस जैसे क्षेत्रों में हो रहे बहुत से वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के चलते एक ओर विश्वभर में अकुशल कामगारों की जगह मशीनें काम करने लगी है और दूसरी ओर डेटा साइंस, कम्प्यूटर साइंस और गणित के क्षेत्रों में ऐसे कुशल कामगारों की जरूरत और माँग बढ़ी है, जो विज्ञान और समाज विज्ञान और मानविकी के विविध विषयों में योग्यता रखते है।

कोरोना महामारी ने पिछले वर्षो में दुनिया भर में शिक्षा और शैक्षिक प्रणालियों को अत्यधिक प्रभावित किया है। कोरोना के प्रभाव को कम करने की कोशिश में दुनिया भर की शिक्षण संस्थानों को अस्थायी रूप से बंद कर दिया गया। पूरी दुनिया में 100 करोड़ के आसपास शिक्षार्थी स्कूल बंद होने के कारण प्रभावित हुए हैं। अब सबसे बड़ा सवाल था कि विद्यार्थी शिक्षा कैसे ग्रहण करें? इसके लिए कई बड़ी संस्थाओं ने जो हल निकाला वह है, ऑनलाइन शिक्षा जो अब लगभग सभी संस्थान धीरे–धीरे ही सही लेकिन अपना रहे हैं।

आज खेलने की प्राचीन विधियों के लुप्त होने का कारण बच्चों का स्मार्टफोन पर गेम खेलने मे अधिक रुचि रखना है जिसके कारण उनमे स्मार्टफोन चलाने की दक्षता अधिक देखी जाती है। ऑनलाइन शिक्षण के दौरान बच्चे लगातार अपने शिक्षकों को फीडबैक के माध्यम से आने वाली समस्याओं से अवगत कराते है जिससे ऑनलाइन शिक्षा को और सरल और सुगम बनाया जा सके।

स्मार्टफोन के प्रति लगाव के कारण बच्चे ऑनलाइन पढ़ने मे भी रुचि रखते है। ऑनलाइन शिक्षा मे ट्यूशन तथा कोचिंग संस्थानों का खर्च भी बचता है उदाहरण के लिए राजस्थान सरकार द्वारा 'स्माइल प्रोग्राम' (सोशल मीडिया इन्टरफेस फार लर्निंग इंगेजमेंट) की शुरुआत 13 अप्रैल 2020 को की गई। इसका उद्देश्य सोशल मीडिया के माध्यम से अधिगम सक्रियता बनाये रखना है। यह कक्षा 1 से 12 तक की कक्षाओं के बच्चों के लिए है। इसमें विद्यालय वार ग्रुप बनाकर अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराया जाता है। 02 नवम्बर 2020 को 'स्माइल 2.0' की शुरुआत की गई, जिसमें कक्षावार समूह बनाकर स्टडी मटेरियल उपलब्ध कराया जाता है। 21 जून 2021 को 'स्माइल 3.0' की शुरुआत कोरोना की दूसरी लहर में किया गया, जिसका स्लोगन 'आओ घर में सीखें' है। स्माइल कार्यक्रम के तहत स्कूली बच्चों को व्हाट्सएप्प को जरिये प्रतिदिन श्रव्य–दृष्य अध्ययन सामग्री, उपलब्ध करायी जाती है।

ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने 17 मई 2020 को PM - EVIDYA नामक प्रोग्राम की घोषणा की जिसकी शुरुआत 30 मई 2010 को हुई। इस योजना का उद्देश्य भारत के सभी बच्चों को

कोरोना संक्रमण से सुरक्षित रखना और उनका सतत् व पर्याप्त शैक्षणिक विकास करना है। इस योजना का लाभ देश के सभी विद्यार्थियों को मिल रहा है। इस योजना के अन्तर्गत 100 विश्वविद्यालय द्वारा ऑनलाइन पाठ्यक्रम की शुरुआत की जाएगी। दीक्षा पोर्टल के माध्यम से स्कूली शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है। कक्षा 1 से 12 तक के छात्रों को 'वन नेशन वन प्लेटफार्म' मुहैया कराने की बात है। वन नेशन वन प्लेटफार्म में पढ़ाई के लिए रेडियो, कम्यूनिटी रेडियों और पॉडकास्ट्स के जरिए शिक्षा ग्रहण करने पर जोर देने की बात है।

भारत सरकार द्वारा छात्रों शिक्षकों और अभिभावकों के मनोवैज्ञानिक सपोर्ट, मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक सहायता के लिए मनोदर्पण योजना की शुरुआत 21 जुलाई 2020 को शिक्षा मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक द्वारा की गई। स्वयं प्रभा, डी० टी० एच० के जरिए बच्चों को पहले से शिक्षा दी जा रही है। इसमें लाइव सेशन का टेलीकास्ट स्काईप के जरिए किया जाता है। प्रतिदिन छः घण्टे की पाठ्यसामग्री और तीन रिपीट टेलीकास्ट के साथ सप्ताह के सभी दिनों में 24X7 करने की व्यवस्था है। इसके अन्तर्गत ग्रामीण इलाकों के छात्र द्वारा लाभ उठाने की व्यवस्था है। टाटा स्काई और एअरटेल टी0वी0 से भी समझौता किया गया है। दिव्यांग बच्चों के लिए स्पेशल 'डिजिटली ऐक्सेसिबल इन्फार्मेशन सिस्टम' (DAISY) के तहत ई – कटेंट प्रोग्राम लाया जाएगा, जिसके अन्तर्गत दिव्यांग छात्रों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रमों की शुरुआत की जाएगी।

साहित्य सर्वेक्षण

शुक्ला, प्रभात (2021) ने आनलाइन माध्यम से शिक्षण के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति के अध्ययन में पाया कि–

(1) 67 प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि ऑनलाइन शिक्षण का उपयोग करने से वे शिक्षण कार्यों को अधिक तेजी से पूरा करने में सक्षम होते है।

(2) 62 प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि ऑनलाइन शिक्षण का उपयोग करना आसान है।

(3) 52 प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि ऑनलाइन शिक्षण का उपयोग करने से शिक्षण में उनकी दक्षता बढ़ जाती है।

(4) 82 प्रतिशत शिक्षक ऑनलाइन शिक्षण को शैक्षिक प्रसार के लिए एक अच्छा माध्यम मानते है।

(5) 83 प्रतिशत शिक्षक ऑनलाइन शिक्षण वर्तमान में आवश्यक मानते है।

(6) 83 प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि ऑनलाइन शिक्षण में विद्यार्थी शिक्षण को गम्भीरता से नही लेते हैं।

(7) 57 प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि ऑनलाइन शिक्षण गुरु–शिष्य सम्बंध को कमजोर करता है।

(8) 83 प्रतिशत शिक्षक ऑनलाइन शिक्षण में नेटवर्क समस्या को निराशाजनक मानते है।

(9) 79 प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि ऑनलाइन शिक्षण से बच्चों को मोबाइल की लत लग गई है।

(10) 76 प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि ऑनलाइन शिक्षण में प्रायः अनुशासन की समस्या सामने आती है।

(11) 85 प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि ऑनलाइन शिक्षण में ऑफलाइन शिक्षण के समान विद्यार्थी शिक्षक अन्तक्रिया नहीं हो पाती।

(12) 68 प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि ऑनलाइन शिक्षण आर्थिक रूप से बहुत महंगा है।

कुमार, अरविन्द (2021) ने कोविड महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों, शिक्षकों एव अभिभावकों का दृष्टिकोण के अध्ययन में पाया कि –

(1) 88.05 प्रतिशत विद्यार्थियों ने माना कि ऑनलाइन शिक्षा से उन्हें सीखने के पर्याप्त अवसर प्राप्त हो रहे है तथा 86 प्रतिशत शिक्षकों ने ऑनलाइन शिक्षा को सीखने सिखाने के नवीन अवसर के रूप में माना।

(2) 77. 91 प्रतिशत विद्यार्थियों ने ऑनलाइन शिक्षा के समय ऑडियो, वीडियो एंव पाठ्यसामग्री की अस्पष्टता तथा 79.01 प्रतिशत शिक्षकों ने यह शिक्षा ग्रहण न करने वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि स्तर का प्रभावित होना माना ।

(3) 68.72 प्रतिशत शिक्षको तथा 52.23 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कहा कि ऑनलाइन शिक्षा में शिक्षक से सीधे अन्तःक्रिया न होने के कारण विद्यार्थी ई–कंटेट को गम्भीरता से नहीं लेते हैं।

अग्रवाल, निधि एवं झा, बबीता (2021) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षा के डिजिटलीकरण से विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव के अध्ययन में पाया कि विद्यार्थियों का शिक्षा का डिजिटलीकरण जिस स्तर का है उसी स्तर का उनका शैक्षिक उपलब्धि भी है अर्थात यदि विद्यार्थियों का शिक्षा का डिजिटलीकरण का स्तर उच्च है तो उन विद्यार्थियों का शैक्षिक उपलब्धि भी ज्यादातर उच्च स्तर का होता है तथा यदि विद्यार्थियों का डिजिटलीकरण का स्तर निम्न है तो उन विद्यार्थियों का शैक्षिक उपलब्धि भी ज्यादातर निम्न स्तर का होता है।

प्रिया, स्वाति (2023) ने वर्तमान समय में ऑनलाइन शिक्षण की चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ के अध्ययन में पाया कि आज के इस डिजिटली युग में ऑनलाइन शिक्षण ने शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण बदलाव लाया है हालांकि इसमें कई चुनौतियाँ भी छुपी हुई है जैसे– गुणवत्तापूर्व शिक्षा व विशेषज्ञता की कमी, छात्र–शिक्षक अन्तःक्रिया की कमी, अनगिनत स्रोतों से जानकारी प्राप्ति की संभावना से गलत या असंवेदनशील जानकारी भी मिल सकती है। ऑनलाइन शिक्षण में अनेक सम्भावनाएँ भी है जैसे– घर बैठे शिक्षा की प्राप्ति के अवसर, छात्र अपनी पढ़ाई अपनी रुचि और गति से कर सकते हैं।

शर्मा, अशोक (2023) ने आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य का उनकी शिक्षण अभिक्षमता पर प्रभाव के अध्ययन में पाया कि ऑनलाइन शिक्षण प्रक्रिया का शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। तथा ऑनलाइन शिक्षण करने वाले शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता पारस्परिक शिक्षण विधि द्वारा शिक्षण करने वाले शिक्षकों की अपेक्षा अच्छी पाई जाती है। साथ ही साथ यह भी पाया कि शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य का उनकी शिक्षण अभिक्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है इसलिए शिक्षकों को अपने शिक्षण में अधिक से अधिक ऑनलाइन शिक्षण उपकरणों का प्रयोग करना चाहिए ताकि शिक्षण को और अधिक रूचिकर व प्रभावशाली बनाया जा सके।

गौतम, वर्षा (2021) ने रीवा विकासखण्ड के हाईस्कूल स्तर के विद्यालयों में कोविड–19 के दौरान ऑनलाइन शिक्षा की चुनौतियों को समीक्षात्मक अध्ययन में पाया कि 62.5 प्रतिशत प्राचार्य, 68.8 प्रतिशत शिक्षक, 62.5 प्रतिशत विद्यार्थी व 71.9 प्रतिशत अभिभावक यह मानते है कि डिजिटल डिवाइस की कमी और नेट की खराब कनेक्विटी से ऑनलाइन शिक्षा प्रभावित हुई है। साथ ही साथ यह भी पाया कि कोविड के दौरान शहरी क्षेत्र के बच्चों को पर्याप्त डिजिटल संसाधन उपलब्ध था जबकि ग्रामीण क्षेत्र मे डिजिटल संसाधन की उपलब्धता पर्याप्त नही थी अध्ययन में यह पाया कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों में डिजिटल संसाधनों की कमी से उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।

ऑनलाइन शिक्षा

प्रस्तुत अध्ययन में ऑनलाइन शिक्षा से अभिप्राय इण्टरनेट द्वारा साझा की गई शैक्षिक सामग्रियों से प्राप्त शिक्षा से है। यह विभिन्न प्लेटफार्म जैसे– व्हाटसएप्प, फेसबुकपेज, यूट्यूब आदि से लोगों तक पहुँचाई जाती है। इसमें विभिन्न प्रकार की शैक्षिक सामग्रियाँ जैसे PDF, ऑडियो, वीडियो, स्लाइडशो,लाइव ऑनलाइन क्लास, वर्ड डॉक्यूमेंट और डिजिटलमाध्यमो से सवाल पूछना आदि शामिल है।

इंटरनेट और बेव ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों जैसे ऑनलाइन शिक्षा, वैश्विक डिजिटल पुस्तकालय, ई कामर्स, इलेक्ट्रानिक पब्लिशिंग, इलेक्ट्रानिक संसाधन इत्यादि में आश्चर्यजनक बदलाव किया है। सूचना के दृष्टिकोण से इंटरनेट सेवा वैश्विक स्तर पर एक महत्त्वपूर्ण सेवा के रूप में उभरी हैं। ऑनलाइन अधिगम इंटरनेट आधारित शैक्षिक प्रणाली है। इसमें विभिन्न प्रकार के शैक्षिक सामग्रियों जैसे आडियो, वीडियो, PDF. स्लाइडशो लाइव आनलाइन क्लास, वर्ड डॉक्यूमेंट आदि को विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफार्म जैसे यूट्यूव, व्हाट्सएप्प, फेसवुक पेज आदि के द्वारा उपलब्ध कराया जाता है। गूगल मीट और जूम एप जैसे अनेक प्लेटफार्म जहाँ शिक्षक और शिक्षार्थी एक ही आभासी वातावरण में मिलते है और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया संचालित होती है।

ऑनलाइन शिक्षा के लाभ

ऑनलाइन शिक्षा प्रसार व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की दृष्टि से एक उपयुक्त व्यवस्था है। वर्तमान समय में यह कम लागत की कुशल तकनीक है जो बिना किसी भेदभाव के सभी के लिए उपलब्ध होने वाली शिक्षा है। ऑनलाइन शिक्षा मे हाल अपनी क्षमता योग्यता और रुचि के अनुसार शिक्षा ग्रहण कर सकता है। इसमें छात्र नवीनतम् जानकारियों से परिचित रहता है साथ ही साथ पाठपक्रम ऑनलाइन उपलब्ध होने के कारण उसमे धन की भी बचत होती है। विशेषज्ञों द्वारा तैयार किये गये ऑनलाइन पाठ्यक्रम छात्रों को उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करने की संभावना प्रदान करते हैं। इस प्रकार की शिक्षा छात्रों को घर से ही पढ़ाई करने की अनुमति देता है जिससे यात्रा और समय की बचत होती है। ऑनलाइन शिक्षा उन विद्यार्थियों के लिए वरदान बन गया है जो किसी कारणवश स्कूल व कालेज जाने में सक्षम नहीं है।

ऑनलाइन शिक्षा की कमियाँ

ऑनलाइन शिक्षा मे छात्र–शिक्षक सम्पर्क सीमित होता है, जिससे छात्रों को दी जाने वाली सहायता में कमी हो सकती है। विचारशीलता, जिज्ञासा संदेह और प्रश्नों का सीधा उत्तर प्राप्त करने की क्षमता प्रभावित हो सकती है। ऑनलाइन शिक्षा में छात्रों को समय का उपयोग सही तरीके से करना सीखना पड़ता है। अधिकांश छात्र पढ़ाई करते करते अन्य प्लेटफार्म पर जाकर मनोरंजन करने लगते है जिससे उनका अधिकांश समय बेकार हो जाता है। हमारा देश गाँवों का देश कहा जाता है जहाँ अभी भी हर गाँव मे बिजली की व्यवस्था नहीं है, इंटरनेट की धीमी गति व अपर्याप्त पहुँच बड़ी समस्या है। भारत मे अभी भी ऑनलाइन शिक्षण के लिए योग्य शिक्षक तैयार करने हेतु प्रशिक्षण एवं तकनीकी जानकारी का अभाव है। ग्रामीण क्षेत्रों में कम्प्यूटर, स्मार्टफोन, इन्टरनेट पैक खरीदने की क्षमता लोगों मे नहीं है।

ऑनलाइन शिक्षा की चुनौतियॉ

ऑनलाइन शिक्षा की हानियों को कम करने के साथ साथ इससे हम कैसे अधिक से अधिक लाभ प्राप्त कर सकते है इस पर भी ध्यान केन्द्रित करने की बात की गई है । इसमें कहा गया है कि ऑनलाइन शिक्षा का लाभ तब तक नहीं उठाया जा सकता जब तक डिजिटल इंडिया अभियान और किफायती कम्प्यूटिंग उपकरणों की उपलब्धता जैसे ठोस प्रयासो माध्यम से डिजिटल अंतर को समाप्त नही नहीं किया जाता। इसमे आगे कहा गया है कि प्रभावशाली ऑनलाइन प्रशिक्षक बनने के लिए शिक्षकों को उपयुक्त प्रशिक्षण और विकास चाहिए। अध्यापन मे आवश्यक परिवर्तनों के अलावा ऑनलाइन आकलन के लिए भी एक अलग दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। बड़े पैमाने पर ऑनलाइन परीक्षा आयोजित करने मे कई चुनौतियाँ है, जिनमे ऑनलाइन परिवेश मे पूछे जाने वाले प्रश्नों के प्रकार से सम्बन्धित सीमाएं, नेटवर्क, बिजली के व्यवधान, अनैतिक प्रथाओं को रोकना शामिल है। इसके अलावा जब तक ऑनलाइन शिक्षा को

अनुभावात्मक और गतिविधि आधारित शिक्षा के साथ मिश्रित नहीं किया जाता तब तक यह सीखने के सामाजिक, भावात्मक और क्रियात्मक आयामों पर सीमित फोकस वाली एक स्क्रीन आधारित शिक्षा मात्र ही बन जाएगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं ऑनलाइन शिक्षा

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को पहले से ही ऑनलाइन की ओर ले जाने की सरकार की मुहिम चल रही थी जिसे कोरोना संकट ने अब और तेज गति दी है मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने 'भारत पढ़े अनलाइन' अभियान की शुरुआत की है। कई पाठ्यक्रमों को भविष्य में ऑनलाइन पढ़ाने की तैयारी है यू०जी०सी0 ने इसके लिए पूरा प्लान जारी कर दिया है जिसके तहत विश्वविद्यालयों को राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 के अन्तर्गत प्रत्येक पाठ्यक्रम का 25 फीसद हिस्सा ऑनलाइन पढ़ाना अनिवार्य होगा।

सरकार का ध्यान ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देने के साथ शिक्षकों को इसके लिए तैयार करने पर भी है इसके लिए स्कूलों मे पढ़ाने वाले सभी शिक्षकों को ऑनलाइन प्रशिक्षण देने की तैयारी है उसके लिए राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) और NCERT को पूरा प्रोग्राम तैयार करने का कार्यभार सौंपा गया है।

नई शिक्षा नीति 2020 में ऑनलाइन शिक्षण अधिगम प्रणाली और इसके लिए नई–नई तकनीकों के विकास पर काफी जोर दिया गया है। नई शिक्षा नीति 2020 के अध्याय 24 के शीर्षक 'ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा–प्रौद्योगिकी का न्याय सम्मत उपयोग सुनिश्चित करना' में ऑनलाइन शिक्षण सामग्री के साथ साथ डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर, पायलट अध्ययन, ऑनलाइन शिक्षण मंच और उपकरण, डिजिटल अन्तर को कम करना, वर्चुअल लैब की स्थापना आदि को प्रमुखता से स्थान दिया गया है। इस अध्याय के आरम्भ में कहा गया है– नई परिस्थितियाँ और वास्तविकताओं के लिए नई पहले अपेक्षित है। संक्रामक रोगों और वैश्विक महामारियों में हाल में वृद्धि को देखते हुए यह जरूरी हो गया है कि जब भी और जहाँ भी शिक्षा के पारम्परिक और विशेष साधन सम्भव न हो वहाँ हम गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के वैकल्पिक साधनों के साथ तैयार हों।

प्रौद्योगिकी के विकास और महत्त्व को देखते हुए स्कूल से लेकर उच्चतर शिक्षा तक यह नीति निम्नलिखित पहलों की सिफारिश करती है –

ऑनलाइन शिक्षा के पायलट अध्ययन के लिए एनईटीएफ, सीआईईटी, एनआईओएस इग्नू, आईआईटी, एनआईटी आदि उपयुक्त एजेंसियों की पहचान की जाएगी। इन पायलट अध्ययनों के परिणामों को सार्वजनिक कर निरन्तर सुधार के लिए इनका उपयोग किया जाएगा।

भारत के विस्तार, विविधता, जटिलता और डिवाइस अर्थबोध को हल करने के लिए शिक्षा के क्षेत्र मे खुले, परस्पर विकसित सार्वजनिक डिजिटल इन्फास्ट्रक्चर का निर्माण करने की आवश्यकता है।

ऑनलाइन शिक्षण मंच और उपकरण के रूप मे स्वयम और दीक्षा जैसे मौजूदा ई–लर्निंग प्लेटफार्म का विस्तार किया जाएगा। साथ ही ऑनलाइन कक्षाओं के लिए दो तरफा वीडियो और आडियो इंटरफेस जैसे उपकरण एक वास्तविक आवश्यकता है।

डिजिटल अंतर को कम करने के लिए जनसंचार माध्यमों जैसे टेलीविजन, रेडियो और सामुदायिक रेडियो का उपयोग टेलीकास्ट और प्रसारण के लिए बड़े पैमाने पर किया जायेगा। सभी भारतीय भाषाओं मे सामग्री 24X7 उपलब्ध कराया जायेगा।

वर्चुअल लैब बनाने के लिए दीक्षा, स्वयं, और स्वयंप्रभा जैसे माजूदा ई लर्निंग प्लेटफार्म का उपयोग किया जाएगा। छात्रों और शिक्षकों को पहले से अपलोड की गई सामग्री वाले टैबलेट जैसे उपयुक्त उपकरण पर्याप्त रूप से देने की सम्भावना पर विचार किया जाएगा।

शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण और प्रोत्साहन के तहत शिक्षकों को शिक्षार्थी केन्द्रित अध्यापन में गहन प्रशिक्षण दिया जाएगा और यह भी बताया जाएगा कि वे ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफार्म और उपकरणों का उपयोग करके उच्चतर गुणवत्ता वाली ऑनलाइन सामग्री का स्वयं सृजन करें।

21वीं सदी के कौशल पर ध्यान केन्द्रित करते हुए शिक्षा तकनीकी का प्रयोग कर मूल्यांकन के नए तरीकों का अध्ययन किया जाएगा। साथ ही राष्ट्रीय मूल्यांकन केंद्र अथवा परख, स्कूल बोर्ड, एनटीए आदि निकाय मूल्यांकन रूपरेखाओं का निर्धारण करेंगे।

सीखने के मिश्रित मॉडल में डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने के साथ साथ परम्परागत सीखने सिखाने के महत्त्व को भी स्वीकार करने की बात की गई है।

विश्व स्तरीय डिजिटल इन्फास्ट्रक्चर, शैक्षिक डिजिटल कंटेंट सामग्री और क्षमता का निर्माण करने के लिए एक समर्पित इकाई की स्थापना की जाएगी। तेजी से बदलते प्रौद्योगिकी और उच्च गुणवत्ता वाले ई लर्निंग को विकसित करने के लिए विशेषज्ञों की आवश्यकता है अतः इस क्षेत्र में प्रशासन, शिक्षा, शैक्षिक प्रौद्योगिकी, डिजिटल शिक्षा और मूल्यांकन, ई गवर्नेस आदि क्षेत्रों से जुड़े विशेषज्ञ शामिल होंगे।

निष्कर्ष

बदलते परिवेश में ऑनलाइन शिक्षण/ ई–लर्निंग की बात करें तो इसके महत्त्व को समाज धीरे धीरे स्वीकार करने लगा है। कोरोना काल मे शुरू हुई ऑनलाइन शिक्षण व्यवस्था अब भारत सरकार द्वारा जारी नई शिक्षा नीति 2020 का एक महत्त्वपूर्ण भाग हो गया है। नई शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से सरकार डिजिटल शिक्षा के क्षेत्र में निरन्तर आगे बढ़ने का प्रयास कर रही है। भारत के विस्तार, विविधता और जटिलता को यदि ध्यान से देखा जाय तो ऑनलाइन शिक्षा यहाँ पर विकास के नये आयाम स्थापित कर सकता है। विद्यार्थी इससे सरल, सुलभ सस्ती व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर आने वाले अपने भविष्य के साथ–साथ देश के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक व आर्थिक क्षेत्रों में विकास को गति प्रदान करेंगे। ऐसी हम आशा कर सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

[1]. प्रिया, स्वाति (2023) : वर्तमान समय में ऑनलाइन शिक्षण की चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएं. इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टी डिसीपिल्नरी रिसर्च इन आर्टस् एण्ड टेक्नोलॉजी3 (1), पृष्ठ 19–23.

[2]. अग्रवाल, निधि एवं झा, बबीता (2021) : उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षा के डिजिटलीकरण से विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन . इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांसेस इन सोशल साइन्सेस, 9 (1),पृष्ठ 27–33. https://www.ijassonline.in/HTMLPaper.aspx?Journal=International%20Journal%20of%20Advances%20in%20Social%20Sciences;PID=2021-9-1-5

[3]. कुमार, अरविन्द (2021) : कोविड महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों, शिक्षकों एंव अभिभावकों का दृष्टिकोण. अपनी माटी, (अंक 38), 30 दिसम्बर 2021. https://www.apnimaati.com/2021/12/blog-post_81.html?m=1

[4]. शर्मा, अशोक (2023). ऑनलाइन शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य का उनकी शिक्षण अभिक्षमता पर प्रभाव का अध्ययन .आइडियालिस्टिक जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च इन प्रोग्रेसिव इस्पेक्ट्रमस 2(1), पृष्ठ 23–33.

[5]. गौतम, वर्षा (2022). रीवा विकास खण्ड के हाईस्कूल स्तर के विद्यालयों में कोविड–19 मे दौरान ऑनलाइन शिक्षा की चुनौतियों का समीक्षात्मक अध्ययन.इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च, 8(1), पृष्ठ 267–270. https://www.allresearchjournal.com/archives/?year=2022&vol=8&issue=1&part=E&ArticleId=9356

[6]. कुमार, निर्भय, एंव पालीवाल, अनुराधा (2020). नई शिक्षा नीति 2020 में ऑनलाइन शिक्षा तथा भारत में चुनौतियाँ. इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक डेवलेपमेंट एण्ड रिसर्च, 7(1) पृष्ठ 185–195. https://www.ijsdr.org/viewpaperforall.php?paper=IJSDR2203027

[7]. वर्मा, अभिषेक (2022). मुख्य शिक्षा में ऑनलाइन शिक्षा की भूमिका.स्कालरली रिसर्च जर्नल फार इंटरडिसिपिलीनरी स्टडीज, 70 (9) पृष्ठ 16662–16669. https://issuu.com/dr.yashpalnetragaonkar/docs/4.abhishek_verma

[8]. कुमारी, मीरा (2020).नई शिक्षा नीति 2020 में आईसीटी का प्रभाव जर्नल ऑफ इमर जिंग टेक्नोलॉजीज एण्ड इनोवेटिव रिसर्च, 9 (4), पृष्ठ C2193 – C199. https://www.jetir.org/papers/JETIR2204227.pdf

[9]. कुमार, सुनील (2021). नई शिक्षा नीति 2020 में ई–लर्निंग की ओर भारत के बढ़ते कदम. अधिगम (अंक20)पृष्ठ91–96. https://www.sieallahabad.org/hrt-admin/book/book_file/bf235756662414e201f8abd9a9187d79.pdf

[10]. स्वामी, दीपा (2021) .छात्राओं में ई–लर्निंग की जानकारी पर एक अध्ययन.इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ,होमसाइंस,7(2),पृष्ठ8–100.https://www.homesciencejournal.com/archives/2021/vol7issue2/PartA/7-1-51-802.pdf

[11]. राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 2020: मानव संसाधन विकास मंत्रालय: भारत सरकार, परिचय,पृष्ठ–3. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf

[12]. राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 2020 : मानव संसाधन विकास मंत्रालय : भारत सरकार, अध्याय–24, पृष्ठ 95–98. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf

[13]. स्माइल कार्यक्रम https://www.gkhub.in/smile-programme-education-in-rajasthan/

[14]. PM- E VIDYA & DIKSHA PORTAL https://pmevidya.education.gov.in/Hindi/index-hi.html

[15]. मनोदर्पण योजना https://www.education.gov.in/covid-19/Hindi/hi_index.html

[16]. DAISY https://daisyindia-org.translate.goog/home/what-is-daisy/?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc

Cite this Article

श्याम नरायन सिंह, डॉ0 हंसराज, "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं ऑनलाइन शिक्षा", *International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST), ISSN: 2584-0231, Volume 2, Issue 3, pp. 49-56, March 2024.*

Journal URL: *https://ijmrast.com/*

DOI: *https://doi.org/10.61778/ijmrast.v2i3.45*

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.